स्मृतिशेष

डॉ राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' विशेष

e-abhivyakti

www.e-abhivyakti.com

प्रिय मित्रों,

एक वर्ष के बाद भी ऐसा नहीं लगता कि सुमित्र जी नहीं रहे। ऐसा लगता है कि उनसे कल ही तो बात हुई थी। किन्तु, मृत्यु तो अटल सत्य है जिसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। वे अपने स्वजनों को शारीरिक रूप से अवश्य छोड़ कर चले गए किन्तु, उनकी स्मृतियाँ सदैव उनकी पीढ़ी एवं वर्तमान पीढ़ी के मस्तिष्क में आजीवन रहेंगी।

सुमित्र जी से पहली मुलाक़ात मेरे स्व पिताश्री टी डी बावनकर जी (सुमित्र जी के मित्र) के साथ 1982 की एक शाम को उनके निवास पर हुई। उसके बाद एक ऐसा संबंध बना जो आजीवन चलता रहेगा। उनके द्वारा प्रकाशित मेरी प्रथम कहानी **"चुभता हुआ सत्य'** नवीन दुनिया के **पाक्षिक तरंग** के **प्रवेशांक** में प्रकाशित हुई थी। उनके पत्र एवं तरंग की प्रति मेरे पास अभी तक सुरक्षित है।

मेरी उपरोक्त स्मृति तो मात्र एक प्रतीकात्मक उदाहरण हैं उनसे जुडने वाले अनेकों मित्रों का जिन्हें उन्होने आजीवन अपना आत्मीय स्नेह और मार्गदर्शन दिया है। ऐसी अनेक कहानियाँ और संस्मरण आपको संस्कारधानी के साहित्य जगत में ही नहीं अपितु सारे विश्व के कई मित्रों में मिलेंगी।

ई-अभिव्यक्ति के प्रवेशांक के लिए उनके आशीष स्वरूप प्राप्त कविता उद्धृत कर रहा हूँ जो मुझे ई-अभिव्यक्ति के सम्पादन में सदैव सकारात्मक मार्गदर्शन देती रहती है।

संकेतों के सेतु पर
साधे काम तुरंत |
दीर्घवयी हो जयी हो
कर्मठ प्रिय हेमंत

०

काम तुम्हारा कठिन है
बहुत कठिन अभिव्यक्ति
बंद तिजोरी सा यहां
दिखता है हर व्यक्ति

०

मनोवृति हो निर्मला
प्रकटें निर्मल भाव
यदि शब्दों का असंयम
हो विपरीत प्रभाव ||

०

सजग नागरिक की तरह
जाहिर हो अभिव्यक्ति
सर्वोपरि है देशहित
बड़ा न कोई व्यक्ति|

स्थान : दिल्ली - 15 /10/18

मित्र **श्री संतोष नेमा जी** ने हाल ही में **'सुमित्र संस्मरण'** प्रकाशित किया है। जिसमें 60 से अधिक लोगों के संस्मरण प्रकाशित किए गए हैं। श्री नेमा जी के शब्दों में ही ***"साहित्य के गंभीर अध्येता, अद्भुत रचनात्मकता, माधुर्य व्यवहार के चलते उनके हजारों चाहने वाले हैं जिनके दिलों में राजकुमार की तरह राज करते हैं. इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनकी श्रद्धांजलि सभा में भीड़ में उपस्थित हर एक आदमी अपनी भावांजलि देने के लिए आतुर था. जब मैंने यह देखा तब उसी क्षण मेरे मन में यह विचार आया की क्यों ना एक सुमित्र संस्मरण का प्रकाशन किया जाए जिसमें उनके प्रति सभी साहित्यकारों के संस्मरण एवं भाव समाहित किए जा सकें."***

सुमित्र जी के अनेकों स्वजनो के अनेकों संस्मरण हैं जो आजीवन उनकी याद दिलाते रहेंगे। उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर यह विशेष संस्करण भी मात्र एक प्रतीक ही है।

हेमन्त बावनकर, पुणे
वर्तमान में बेंगलुरु से

अनुक्रमणिका

जब सुमित्र जी ने सम्मान ठुकरा दिया था - आचार्य भगवत दुबे 4
सुमित्र जी को स्मरण करते हुए - डॉ. कुन्दन सिंह परिहार 6
हमारे राजू भैया...!!!!!!! - श्रीमती निर्मला तिवारी 7
मेरे प्यारे दादा - कु आराध्या तिवारी प्रियम..8
मेरे बड़े भैया - आनंद कुमार तिवारी...9
डॉ.राजकुमार तिवारी सुमित्र - व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ भावना शुक्ल 11
पिताश्री से मिला जीवन समझने का सार्थक दृष्टिकोण - डॉ हर्ष कुमार तिवारी 17
वो तो मेरे कृष्ण थे... - श्री राजेश पाठक प्रवीण...18
सबके दिलों के राजकुमार सुमित्र जी - श्री संतोष नेमा 'संतोष' 19
व्यक्ति नहीं संस्था बन चुके थे राजकुमार तिवारी सुमित्र - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव...........21
पारदर्शी व्यक्तित्व मेरे पिता - डॉ. राजकुमार 'सुमित्र - डॉ. भावना शुक्ल 22
विराट व्यक्तित्वः मेरे पापा डॉ राजकुमार सुमित्र - डॉ. कामना कौस्तुभ 25
कहाँ गए वे लोग - राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' - श्री प्रतुल श्रीवास्तव....................................28
यादों में सुमित्र जी - श्री यशोवर्धन पाठक..30
राजकुमार सुमित्र : मित्रता का सगुण स्वरुप - श्री राजेंद्र चन्द्रकान्त राय 32
साहित्य के पारस मणि: डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' - श्री रमाकांत ताम्रकार.....................34
संस्मरण - पारदर्शी परसाई - स्मृतिशेष डॉ राजकुमार तिवारी सुमित्र....................................36

जब सुमित्र जी ने सम्मान ठुकरा दिया था - आचार्य भगवत दुबे

सन 2002 के आस-पास की बात है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने के लिए जबलपुर से पं हरिकृष्ण त्रिपाठी, पं रासबिहारी पाण्डेय, श्रीराम ठाकुर दादा के साथ ही डॉ राजकुमार 'सुमित्र' जी अपनी पत्नी श्रीमती गायत्री तिवारी के साथ इलाहाबाद गये हुए थे। सम्मेलन का दो दिवसीय अधिवेशन, महादेवी वर्मा विद्यापीठ के सभागार में हो रहा था।

उस अधिवेशन में अन्य वक्ताओं के साथ ही डॉ राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' ने हिन्दी की दशा और दिशा पर बड़ा प्रभावशाली वक्तव्य दिया था। दूसरे दिन अंतिम सत्र में सम्मान समारोह था। सुमित्र जी को विद्यावाचस्पति सम्मान मिलना था। किन्तु समारोह के पूर्व ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री पं श्रीधर शास्त्री ने किसी बात को लेकर सुमित्र जी को अपमानजनक शब्द कह दिये, जिन्हे सुनकर सुमित्र जी क्रुद्ध हो गये। उन्होने आव देखा न ताव और शास्त्री जी से कह दिया कि मैं ऐसे सम्मान का भूखा नहीं हूँ। मैं ऐसे अपमान भरे सम्मान को ठोकर मारता हूँ और तमतमाते हुए सभागार से बाहर निकल आए। अपनी धर्मपत्नी गायत्री तिवारी को भी इशारे से बाहर बुला लिया। कुछ देर के लिए सभागार में सन्नाटा छा गया।

उन दिनों श्रीधर शास्त्री जी का ऐसा दबदबा था कि उनके भय से किसी ने भी सुमित्र जी को मनाने का प्रयास नहीं किया। सुमित्र जी ने अपने स्वाभिमान के लिए सम्मान ठुकरा दिया और वे रात्रि की ट्रेन से जबलपुर वापस आ गए। लगभग पाँच वर्ष तक सुमित्र जी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्यक्रमों में नहीं गये । यद्यपि प्रतिवर्ष शास्त्री जी सुमित्र जी के पास आमंत्रण भेजते रहे। इस बीच मेरे साथ सारी घटना से मुझे अवगत कराया गया। गायत्री जी की इच्छा थी कि पंडितजी (सुमित्र जी) भी हम लोगों के साथ जाया करें।

मैंने सुमित्र जी को समझाया कि शास्त्री जी हम लोगों से बहुत बड़े हैं। आपके पास हर समारोह का आमंत्रण भेजते रहते हैं। अब आप पुरानी बात भूल जाइए और मेरे साथ प्रयाग चलिये। मैंने उन्हें मना लिया। वे प्रयाग चलने के लिए राजी हो गये। इस बात से सर्वाधिक प्रसन्नता डॉ गायत्री तिवारी जी को हुई।

सन 2007 के आस पास डॉ गार्गीशरण मिश्र 'मराल', श्री सनातन कुमार बाजपेयी 'सनातन', डॉ गायत्री तिवारी के साथ ही डॉ राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' जी आदि सभी मेरे साथ, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में जाकर सम्मिलित हुए। सदा की भांति हम लोगों ने शास्त्री जी के चरण स्पर्श किए। शास्त्री जी ने भी हँसते हुए सुमित्र जी का हालचाल पूछा। इसके बाद तो हम लोगों की और भी सघन यात्राएं प्रारम्भ हो गईं। मुझे, सुमित्र जी एवं मराल जी को साहित्य जगत में, ब्रह्मा, विष्णु, महेश (त्रिदेव) के नाम से जाना जाने लगा। फिर तो हम लोगों ने देश एवं देश के बाहर होने वाले साहित्यिक आयोजनों में साथ-साथ जाकर चिरस्मरणीय यात्राएं कीं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, भारती परिषद प्रयाग, आथर्स गिल्ड ऑफ इण्डिया, साहित्य मण्डल श्रीनाथद्वारा, पूर्वोत्तर हिन्दी साहित्य समागम शिलोंग, भारत नेपाल साहित्य सम्मेलन, काठमाण्डू, भारत-सोवियत रूस साहित्यिक, सामाजिक सद्भाव यात्रा मास्को, भारतेन्दु हिन्दी परिषद कोटा, हिन्दी-उर्दू मजलिस, सागर, हिन्दी-उर्दू सद्भावना परिषद, खंडवा, राजभाषा प्रचार समिति भोपाल, म प्र लेखक संघ भोपाल, तुलसी साहित्य अकादमी, भोपाल।

अलग-अलग अवसरों पर भिन्न-भिन्न साहित्यिक संस्थाओं के आयोजनों में सम्मिलित होने के लिए मिजोरम, चेरापूंजी, शिलांग, चेन्नई, बंगलोर, मैसूर, त्रिशूर (केरल), अंडमान निकोबार, मुंबई, हैदराबाद, अहमदाबाद, ऋषिकेश, मथुरा, दिल्ली, आगरा, गया, पटना, गुवाहाटी, पुणे, रायबरेली , हरियाणा, प्रतापगढ़, विकरमपुर एवं सहिनबां, सुल्तानपुर, मैनपुरी, लखनऊ, सीतापुर, नैमिषारण्य, उन्नाव, कानपुर, आदि विभिन्न स्थलों की यात्राएं हम लोगों ने साथ-साथ कीं। किसी यात्रा में कोई हमारे साथ रहा किसी यात्रा में कोई यथा गार्गीशरण मिश्र 'मराल', श्री सनातन कुमार बाजपेयी 'सनातन', डॉ सुमित्र, डॉ गायत्री तिवारी, डॉ साधना उपाध्याय, डॉ गीता 'गीत', डॉ उषा दुबे, डॉ सलमा जमाल, श्री राजेश पाठक 'प्रवीण', श्री दीपक तिवारी, श्री अमरेन्द्र नारायण, श्री आलोक श्रीवास्तव, डॉ भावना शुक्ल, कामना 'कौस्तुभ', श्री मोहन लोधिया, श्री भैयाराम कसार के साथ हमने अनेक स्थलों की चिरस्मरणीय यात्राएं की हैं।

आचार्य भगवत दुबे

संपर्क *- 82, पी एन्ड टी कॉलोनी, जसूजा सिटी, पोस्ट गढ़ा, जबलपुर, मध्य प्रदेश*

सुमित्र जी को स्मरण करते हुए - डॉ. कुन्दन सिंह परिहार

स्व. राजकुमार सुमित्र के निधन से जबलपुर की बड़ी क्षति हुई है। वे उन चन्द लोगों में से थे जो जबलपुर की संस्कृति के प्रतिनिधि माने जाते रहे। उनकी जीवन-शैली भी विशिष्ट रही। उनकी अर्जित विद्वत्ता के साथ ही उनमें जबलपुर का विशिष्ट फक्कड़पन देखने को मिलता था। उनकी वेशभूषा में हमेशा सादगी रहती थी और घर में वे हमेशा अपने तख्त पर बिछे हुए गद्दे पर आराम की मुद्रा में दिखते थे। मैंने उन्हें कभी उत्तेजित या हड़बड़ी में नहीं पाया।

सुमित्र जी जबलपुर की उस पीढ़ी के अवशिष्ट सदस्य थे जिन पर जबलपुर आज भी गर्व करता है। इनमें भवानी प्रसाद तिवारी, रामेश्वर गुरू, रामानुज लाल श्रीवास्तव, नर्मदा प्रसाद खरे, हरिशंकर परसाई, सेठ गोविन्द दास जैसे महापुरुष थे। सुमित्र जी के जाने से वह पीढ़ी लगभग समाप्त हो गयी है।

सुमित्र जी के पास बैठना एक अनुभव होता था। उनके पास जबलपुर और मध्य प्रदेश का पूरा इतिहास उपलब्ध था। बातें करने और नगर के इतिहास के पन्ने खोलने में उन्हें आनन्द आता था। उनके पास बैठने के बाद समय बेमानी हो जाता था। सुनने वाला उनकी बातों के रस में खो जाता था।

सुमित्र जी सभी विधाओं में लिखते थे। इसके अतिरिक्त वे जाने-माने पत्रकार भी थे और कुछ समय तक स्थानीय 'नवीन दुनिया' अखबार के संपादक मंडल में भी रहे थे। वे नये लेखकों को खूब प्रोत्साहित करते थे और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए उनकी रचनाएं अपने अखबार में छापते थे। मुझे नगर के कई लेखकों ने बताया कि सुमित्र जी ने उनसे मांग कर उनकी रचनाएं छापीं। वे इस मामले में बड़े उदार थे।

मुझे एक प्रसंग याद आता है। मैंने अपना एक व्यंग्य 'नवीन दुनिया' के लिए उन्हें दिया था। उन्होंने उसे छाप दिया, लेकिन मैं उसे देख नहीं पाया और उसके न छपने की शिकायत लेकर उनके पास पहुंच गया। उन्होंने मेरी बात को सच मानकर उसे दुबारा छाप दिया। बाद में मुझे अपनी गलती मालूम हुई, लेकिन सुमित्र जी ने बुरा नहीं माना ।

सुमित्र जी बड़े मृदुभाषी थे। उनकी वाणी में सहज मिठास थी। विशद ज्ञान के साथ वे वाणी के धनी थे। इसीलिए उनका जबलपुर का परिचय-वृत्त विशाल था। जबलपुर के साहित्यकारों और संस्कृति- कर्मियों के लिए वे सहज उपलब्ध रहते थे। लोग उन्हें अपने कार्यक्रमों में आमंत्रित करते थे और वे शायद ही किसी को निराश करते हों। जब उन्हें चलने-फिरने में कठिनाई होने लगी तब भी वे लोगों को उपकृत करते रहे।

सुमित्र जी जबलपुर और मध्य प्रदेश के संस्कृति-जगत में बहुत लोकप्रिय रहे। जबलपुर के लोगों के मानस में उनकी छवि दीर्घकाल तक अक्षुण्ण रहेगी।

डॉ. कुंदन सिंह परिहार,

संपर्क *- 59, नव आदर्श कॉलोनी, गढ़ा रोड, जबलपुर-2 मो.-9926660392, 7999694788*

हमारे राजू भैया...!!!!!!! - श्रीमती निर्मला तिवारी

"अरे भई देखो, राजू आए हैं। सौ कप चाय बनाओ, सौ प्लेट नाश्ता लगाओ। एक भांजा सौ ब्राह्मणों के बराबर होता है न!!!"

राजू भैया के आते ही घर हँसी-ठहाकों से गूँज उठता। बाबूजी के सबसे प्रिय भांजे थे वे।

समान साहित्यिक रुचियों ने मामा-भांजे को एक डोर में बाँध रखा था।

साहित्यकार सुमित्र को हमने बहुत कम और विलम्ब से जाना। तब नहीं जानते थे कि जो हमारी मँझली बुआ के बड़े सुपुत्र राजू भैया हैं, वे एक विशिष्ट व्यक्ति हैं, साहित्य जगत में शीर्षस्थ हैं और अति सम्मानित कवि है।

भैया का बचपन बहुत डगमगाती नाव के सहारे गुजरा। परिस्थितियाँ विपरीत, संतुलन साधना कठिन। यह तो उन्हीं की सामर्थ्य थी कि उस तपन से ही उन्होंने अपने अंदर के स्वर्ण को निखारा!

अजीब विरोधाभास था।

प्यार करने वाले लोग भी थे और उन्हें सिरे से नकारने वाले लोग भी थे।

बचपन में ही मां को खोकर अबोध राजू भैया का जीवन बूँद बूँद प्रेम और ममता के लिए तरसते हुए पलता रहा। फिर जब उनका समय आया तो उन्होंने अपने आसपास प्यार का ऐसा सागर लहरा दिया कि उनके पास आने वाला कोई भी अतृप्त नहीं गया। दोनों हाथों प्यार लुटाया, और उतना ही समेटा भी!

वे रोम -रोम सु मित्र थे। सभी के लिए!!!

भाभी के दुखद निधन के समय जो आत्मीय जन उपस्थित थे, वे सिर्फ सुमित्र की नेह डोर से बँधे थे।

इस अकेले व्यक्ति का विशाल परिवार था। पीड़ा बांटने नगर की बड़ी -बड़ी विभूतियाँ उपस्थित थीं।

हम तो सिर्फ राजू भैया को जानते थे। सुमित्र जी के आभामंडल ने गौरवान्वित कर दिया!!!

ईश्वर ने कुछ ऐसा विधान रचा था कि हमारे दो सगे भाई होते हुए भी भाई के फर्ज की जहाँ आवश्यकता होती थी, वहाँ सिर्फ राजू भैया ही होते थे।

चाहे विवाह के अवसर पर बारात का स्वागत हो, पाँव पखारना हो, कन्यादान हो, सारी रात भैया उपस्थित!!!

पुत्र मनु के यज्ञोपवीत में भी मामा के सारे नेग भैया ने ही किए।

ऐसा भाई खो गया!!!

यह कहते हुए मन में जरा भी दुविधा नहीं है कि छोटे शहर ने उनके साहित्यिक आकार को पूर्ण विकास का अवसर नहीं दिया। अन्यथा उनकी प्रतिभा मोहन राकेश, कमलेश्वर, धर्मवीर भारती से कम नहीं थी।

आज प्रथम पुण्य तिथि है!

अपने जन्मदिन को लेकर बहुत उत्साहित रहते थे भैया।

सशरीर नहीं हैं वे, पर मन में हमेशा रहेंगे।

सादर श्रद्धांजलि!!!!!

निर्मला तिवारी

जबलपुर

मेरे प्यारे दादा - कु आराध्या तिवारी प्रियम

दादा मेरे लिए हीरो थे दादा से ही मैंने लिखना पढ़ना सीखा। दादा मुझे कहानी सुनाते थे, कविता सुनाते थे ,मेरे मन में जो कुछ भी आता था मैंने भी लिखने की कोशिश की और दादा को मैं सुनाती थी। एक मैंने कॉपी बनाई थी उस कॉपी में मैं लिखती थी कहानी, कविता थोड़े समय के बाद मैं भी अपनी एक पुस्तक बनाऊंगी। अब मैं जो भी कुछ हूं दादा की वजह से ही हूं। दादा मेरे बहुत प्यारे थे और दादा मेरे लिए हमेशा मेरे साथ रहेंगे और मुझे हमेशा रास्ता बताते रहेंगे।

मैं बहुत छोटी थी तब से मैंने मंच पर जाकर बोलना सीखा। दादा को मंच पर देखकर वे कैसा बोलते हैं, मैंने वह सीखा और उनको देखकर ही मेरे मन में ऐसा लगा कि मैं यह सब कर पाऊंगी। और मैं मंच पर जाकर बोलने लगी। हमेशा दादी के प्रोग्राम में मैं दादी के लिए बोलती हूं और मैं दादा के लिए भी मैने बोला। दादा मेरे लिए हीरो थे हीरो ही रहेंगे।

कु आराध्या तिवारी प्रियम

जबलपुर

मेरे बड़े भैया - आनंद कुमार तिवारी

संस्कारधानी जबलपुर में सिटी कोतवाली के निकट सेठ चुन्नीलाल का बाड़ा मेरे बड़े भैया, डॉ. राजकुमार तिवारी "सुमित्र" की जन्मस्थली है। 25 अक्टूबर 1938 कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष द्वितीया उनकी जन्म तिथि है। मातृ पक्ष एवं पितृपक्ष की तीसरी पीढ़ी का प्रथम सदस्य होने के कारण उनके जन्म का स्वागत राजकुमारों की भांति हुआ और उनका नामकरण भी राजकुमार हो गया। वे मुझसे 4 वर्ष बड़े थे।

जब मैं आठ माह का था उसी समय दीर्घ अस्वस्थता के फल स्वरुप हमारी जन्मदात्री का निधन हो गया। हम दोनों भाइयों के उचित पालन पोषण की दृष्टि एवं परिवार की इच्छा के फल स्वरुप हमारे पिताजी पंडित ब्रहम दत्त तिवारी ने पुनर्विवाह कर लिया। विभिन्न कारणों से हम लोग कभी पिताजी तो कभी दादाजी के संरक्षण में रहे। अधिकांशतः हम लोग अपने दादाजी पंडित दीनानाथ जी तिवारी के संरक्षण में ही रहे।

मां के निधन के फल स्वरुप हमारे नाना जी स्वर्गीय विष्णु प्रसाद दुबे का हम लोगों के प्रति विशेष स्नेह था। वे शोभापुर के राजा उमराव सिंह जू देव के यहां मुख्तियार थे। नानाजी हम दोनों भाइयों को गर्मी एवं दीपावली के अवकाश में लेने आते थे। स्कूल के लंबे अवकाश काल में हम उनके पास ही रहते थे।

नाना जी के मित्र श्री अमान सिंह बरुआ शोभापुर मिडिल स्कूल के प्रधान अध्यापक थे। शोभापुर के राजा साहब की व्यक्तिगत रुचि के कारण स्कूल का पुस्तकालय बहुत समृद्ध था। बरुआ जी बड़े भैया को पढ़ने के लिए अच्छी-अच्छी पुस्तकें उपलब्ध करा देते थे। अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ने से ही संभवतः उनमें साहित्यिक अभिरुचि जागृत हुई। लंबे अवकाश के समय हम लोग जब भी शोभापुर जाते वे पुस्तकों में डूब जाते।

जब हमारे पिताजी सागर मे पदस्थ थे तब हम दोनों भाई उनके पास थे। वरिष्ठ साहित्यकार एवं सेवानिवृत्त आय ए एस डॉक्टर अशोक बाजपेई, अग्रज सुमित्र जी के बाल सखा थे। दोनों में वहीं पर साहित्य सृजन का बीजारोपण हुआ। उनकी **प्रथम कविता "मेरा छोटा सा साथी, मेरा छोटा सा हाथी"** का जन्म भी वही हुआ।

बड़े भैया धुन के बड़े पक्के एवं दृढनिश्चयी थे। एक बार शोभापुर में रामायणी "कंज जी" का आगमन हुआ। उन से प्रेरित होकर भैया ने रामायण के अखंड पाठ का निश्चय कर लिया और निराहार- निर्जल, पाठ करने

बैठ गए। "कंज जी" को स्वयं उन्हें समझाने आना पड़ा। जब तक भैया फलाहार एवं अन्य कार्यों से निवृत नहीं हुए उनके स्थान पर "कंज जी" स्वयं बैठकर पाठ करते रहे। बड़े भैया का यह कार्य लंबे समय तक गांव में चर्चित रहा।

गोवा मुक्ति आंदोलन के समय बड़े भैया के मन में आंदोलन में भाग लेने की धुन सवार हुई अतः वे शोभापुर के अपने मित्र श्री अग्नि शर्मा के साथ पिपरिया स्टेशन पहुंचकर रेल में बैठ गए। एक परिचित ने उन्हें देख लिया और डरा धमका कर दोनों मित्रों को रेल से उतार दिया। यदि उस दिन वे जाने मैं सफल हो जाते तो आज गोवा स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जाने जाते।

बड़े भैया स्कूली जीवन में कविता पाठ एवं भाषण प्रतियोगिता आदि गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। **अटल बिहारी वाजपेई की 'अमर आग है', भवानी मिश्र की 'सन्नाटा', बच्चन की 'मधुशाला', मैथिली शरण गुप्त की 'पंचवटी' एवं वीरेंद्र मिश्र की 'मेरा देश है ये इससे प्यार मुझको' आदि कविताएं उन्हे बहुत प्रिय थीं।** इन कविताओं का सस्वर पाठ करके उन्होंने अनेक पुरस्कार प्राप्त किये।

अपनी साहित्यिक सक्रियता के कारण वे जबलपुर के ख्यातिलब्ध साहित्यकार सर्वश्री सेठ गोविंद दास, परमानंद पटेल, भवानी प्रसाद तिवारी, नर्मदा प्रसाद खरे, नत्थू लाल सराफ, गोविंद तिवारी, श्री बाल पांडेय, हरिशंकर परसाई, जवाहरलाल चौरसिया तरुण, मोहन शशि यादव, रामेश्वर शुक्ल अंचल, ब्योहार राजेंद्र सिंह, एवं शहर के अनेक जाने-माने तथा छोटे बड़े साहित्यकारों में लोकप्रिय हो गए थे। उन्होंने अनेक साहित्यिक संस्थाओं को जन्म दिया एवं अनेक के गठन में सहयोग तथा मार्गदर्शन दिया। उन्होंने नगर के अनेक उदीयमान एवं नौसिखिये साहित्यकारों को मार्गदर्शन एवं सहयोग देकर उन्हें परिपक्व बनाया जिनमें से आज अनेक स्थापित एवं ख्यातिलब्ध साहित्यकार बन गए हैं। सुमित्र जी की स्वयं की भी 20 से अधिक कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। मैं स्वयं भी उनकी ही प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से साहित्य के क्षेत्र में आया। उनकी मित्र मंडली भी बहुत व्यापक थी किंतु उनके घनिष्ठ मित्रों में से अब एकमात्र श्री आचार्य भगवत दुबे ही शेष रह गए हैं। ईश्वर उन्हें दीर्घायु और सक्रियता प्रदान करें।

बड़े भैया सुमित्र जी के संबंध में कहने के लिए अनेक न समाप्त होने वाली बातें हैं किंतु विस्तार मैं न जाते हुए अंत में यही कहूंगा कि वे स्वयं के श्रम एवं क्षमता पर अधिक विश्वास करते थे। मैट्रिक के पश्चात पढ़ाई अवरुद्ध हो जाने के पश्चात उन्होंने स्वाध्यायी रूप से पढ़ाई प्रारंभ की तथा बी ए और एम ए के पश्चात पी एच डी की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने अपने जीवन काल में इतनी अधिक पुस्तकें संग्रहित कर ली जो की अन्यत्र दुर्लभ है।

25 फरवरी 2024 को वीडियो कॉल के माध्यम से उनके अंतिम दर्शन हुए। बोलने की शक्ति नहीं थी किंतु सदैव की भांति अभय मुद्रा और आशीर्वाद देने के लिए उनका हाथ ऊपर उठा। 27 फरवरी को उनके महाप्रयाण की सूचना प्राप्त हुई। एक कंधा जिस पर सर रखकर मैं उनकी थपकियों के माध्यम से आज तक आस्वस्त और निर्भय हो जाता था, अब नहीं रहा। किंतु उनकी स्मृति मेरे शेष जीवन काल के लिए प्रेरणास्पद रहेगी।।वे हमारे रोम रोम में जीवित हैं और रहेंगे। उनके पुण्य स्मरण करते हुए उनके श्री चरणों में शत-शत नमन ।

श्री आनंद कुमार तिवारी

संपर्क *- तुलसी धाम, 36 चंचल कॉलोनी, लक्ष्मी नगर के पास, पिपलानी, भोपाल, मध्य प्रदेश*

डॉ.राजकुमार तिवारी सुमित्र - व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ भावना शुक्ल

संस्कारधानी जबलपुर के यशस्वी साहित्यकार, साहित्याकाश के जाज्ज्वल्यमान नक्षत्र, संवेदनशील साहित्य सर्जक, अनुकरणीय, प्रखर पत्रकार, कवि, लेखक, संपादक, व्यंग्यकार, बाल साहित्य के रचयिता, प्रकाशक अनुवादक, धर्म, अध्यात्म, चेतना संपन्न, तत्वदर्शी चिंतक, साहित्यिक-सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाओं के प्रणेता डॉ.राजकुमार तिवारी "सुमित्र" बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। सुमित्र जी में सेवा भावना, सहानुभूति, विनम्रता, गुरु-गंभीरता तथा सहज आत्मीयता की सुगंध उनके व्यक्तित्व में समाहित है।

उन्होंने लगभग छह दशकों तक जन मन को आकर्षित एवं प्रभावित किया। साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में अभूतपूर्व ख्याति अर्जित की है और अनवरत करते जा रहे हैं। नगर ही नहीं देश तथा विदेशों तक उनकी यश पताका लहरा रही है।

जबलपुर के राष्ट्र सेवी साहित्यकार एवं पत्रकार स्वर्गीय पंडित दीनानाथ तिवारी के पौत्र तथा भोपाल के ख्याति लब्ध अधिवक्ता "ज्ञानवारिधि" स्वर्गीय पंडित ब्रहम दत्त तिवारी के सुपुत्र डॉ. राजकुमार तिवारी "सुमित्र" का जन्म 25 अक्टूबर 1938 को जबलपुर नगर में हुआ।

साहित्य और पत्रकारिता के संस्कार उत्तराधिकार में प्राप्त हुए. मानस मर्मज्ञ डॉ ज्ञानवती अवस्थी की प्रेरणा से सन 1952 से काव्य रचना प्रारंभ की। मध्य प्रदेश के अनेक शिक्षण संस्थानों में अध्ययन करते हुए पीएचडी तक की उपाधियाँ ससम्मान प्राप्त की। शिक्षकीय अध्यापन-कर्म से जीवनारंभ कर सुमित्र जी बहुमुखी प्रतिभा साहित्य साधना तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में सतत गतिशील रहे...

सुमित्र जी के शब्दों में...

मित्रों के मित्र सुमित्र का व्यक्तित्व 'यथा नाम तथा गुण' की उक्ति को चरितार्थ करता है, धन से ना सही किंतु मन से तो वे 'राजकुमार' ही है। उन्होंने लिखा है...

"मेरा नाम सुमित्र है, तबीयत राजकुमार।

पीड़ा की जागीर है, बांट रहा हूँ प्यार।"

जबलपुर से प्रकाशित नवीन दुनिया के साहित्य संपादक के रूप में उन्होंने समर्पित होकर पत्रकारिता और साहित्य की सेवा की और ना जाने कितने नवोदित सृजन-धर्मी पत्रकार, कवि, लेखक सुमित्र जी के निश्चल स्नेह और आशीष की छाया तले पल्लवित पुष्पित हुए. जो आज साहित्य की विभिन्न विधाओं में एक समर्थ रचनाकार के रूप में गिने जाते हैं।

साहित्य की शायद ही कोई ऐसी विधा है जिसमें सुमित्र जी ने अपनी लेखनी को ना चलाया होगा इनका कौशल बुंदेली काव्य सृजन में भी देखने को मिलता है।

आपके शब्दों में...वीणा पाणि की आराधना- सुफलित नाद

"शब्द ब्रहम आराधना, सुरभित सफेद नाद।

उसका ही सामर्थ्य है, जिसको मिले प्रसाद।"

सुमित्र जी की रचनात्मक उपलब्धियाँ अनंत है। पत्रकार साहित्यकार डॉ राजकुमार तिवारी सुमित्र ने पत्रकारिता के क्षेत्र को भी गौरवान्वित किया वहीं दूसरी ओर आपने हिन्दी साहित्य के कोष की श्री वृद्धि भी की है। छंद बद्ध कविता, छंद मुक्त कविता, कहानी, व्यंग, नाटक आदि सभी विधाओं में आपने लिखा है इसके साथ ही आपने श्री रमेश थेटे की मराठी कविताओं का रूपांतर'अंधेरे के यात्री' तथा पीयूष वर्षी विद्यावती के मैथिली गीतों का हिन्दी में गीत रूपांतर आपको मूलतः रस प्रवण साहित्यकार सिद्ध करता है आपकी इस साहित्य साधना और साहित्यिक पत्रकारिता अक्षुण्ण है।

सुमित्र जी के काव्य रस की बौछार ...

प्रिय के सौंदर्य को लौकिक दृष्टि से देखते हुए भी उसमें अलौकिकता कैसे आभास किया जा सकता है इस भाव को बड़े ही पवित्र प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया।

नील झील से नयन तुम्हारे

जल पाखी-सा मेरा मन है....

दांपत्य जीवन में रूठना मनाना का क्रम चलता है ऐसे में पत्नी की पति को कुछ कहने के लिए विवश करती है... गीत की कुछ पंक्तियाँ

बिछल गया माथे से आंचल

किस दुनिया में खोई हो

लगता है तुम आज रात भर

चुपके चुपके रोई हो।

रोना तो है सिर्फ़ शिकायत

इसकी उम्र दराज नहीं

टूट टूट कर जो ना बजा हो

ऐसा कोई साज नहीं

मैं तुमसे नाराज नहीं।

दूसरों के सुख दुख में अपने सुख-दुख की प्रतिछाया...

दूसरों के दुख को पहचान

उसे अपने से बड़ा मान

तब तुझे लगेगा कि तू

पहले से ज़्यादा सुखी है

और दुनिया का एक बड़ा हिस्सा

तुझ से भी ज़्यादा दुखी है...

नई कविता के तेवर को अत्यंत मार्मिक ढंग से कविता में प्रस्तुत किया है...

तुमने

मेरी पिनकुशन-सी

जिंदगी से

सारे 'पिन' निकाल लिए

बोलो।

इन खाली जख्मों को लिए

आखिर कोई कब तक जिए;

काव्य शिल्प लिए...

अंतहीन गंधहीन मरुस्थल में

भटकता

मेरा तितली मन

दिवास्वप्न देखता देखता

मृग हो जाता है।

कल्पना का वैशिष्ट...

मेरी दृष्टि

मलबे को कुरेद रही है-

आह! लगता है-

गांधी के रक्त स्नात वस्त्र

काले पड़ गए हैं

पंचशील के पांव में

छाले पड़ गए हैं।

यादें नामक कविता का अंश...

जैसे बिजली कौंधती है

घन में,

यादें कौंधती हैं

मन में।

प्रेम तो ईश्वरीय वरदान है। इनको केंद्रित कर दोहे...

“नहीं प्रेम की व्याख्या, नहीं प्रेम का रूप।

कभी चमकती चांदनी, कभी देखती धूप।“

**

“स्वाति बिंदु-सा प्रेम है, पाते हैं बड़भाग।

प्रेम सुधा संजीवनी, ममता और सुहाग।“

प्रिय की दूरी की पीड़ानुभूति----

“तुम बिन दिन पतझड़ लगे, दर्शन है मधुमास।

एक झलक में टूटता, आंखों का उपवास.. ।”

सुमित्र जी ने स्मृति को, याद को विभिन्न कोणों से चित्रित किया है---------

“याद हमारी आ गई, या कुछ किया प्रयास।

अपना तो यह हाल है, यादें बनी लिबास।”

**

“फूल तुम्हारी याद के, जीवन का एहसास।

वरना है यह जिंदगी, जंगल का रहवास।”

अहंकार के विसर्जन के बिना प्रेम का कोई औचित्य नहीं है।

“सांसो में तुम हो रचे, बचे कहाँ हम शेष।

अहम समर्पित कर दिया, करें और आदेश।”

“फूल अधर पर खिल गए, लिया तुम्हारा नाम ।

मन मीरा-सा हो गया, आँख हुई घनश्याम।“

साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में सुमित्र जी ने जो जीवन जिया वह घटना पूर्ण चुनौतीपूर्ण रहा। सुमित्र के जीवन को सजाया संवारा और उसे गति दी ...जीवनसंगिनी स्मृति शेष डॉ.गायत्री तिवारी ने। मैं अपने आप को बहुत ही सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मैं डॉ. राजकुमार 'सुमित्र' और डॉ गायत्री तिवारी की पुत्री हूँ।

डॉ.भावना शुक्ल

सहसंपादक...प्राची

संपर्क - प्रतीक लॉरेल, J-1504, नोएडा सेक्टर - 120, नोएडा (यू.पी)- 201307 मोब. 9278720311 ईमेल : bhavanasharma30@gmail.com

पिताश्री से मिला जीवन समझने का सार्थक दृष्टिकोण - डॉ हर्ष कुमार तिवारी

संतान के भविष्य निर्माण में पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है अक्सर मेरी अनेक संदर्भ में चर्चा होती रही है। मेरे जीवन का मार्ग भी उन्हीं के मार्गदर्शन में आगे बढ़ रहा है।

पिता श्री के अनुभव आज मुझे जीवन की दिशा दे रहे हैं। जीवन को समझने का एक सार्थक दृष्टिकोण दे रहे हैं। एक शाम पिता श्री से बात करते हुए मैंने कहा था कि मुझे कहीं सुना हुआ याद आ रहा है- “पिता के दर्द को समझा है मैंने पिता बन कर।”

एक वर्ष बीत जाने के बाद आज भी यह महसूस नहीं होता कि वह मेरे साथ नहीं हैं। प्रतिपल उनके निर्देश, मार्गदर्शन मुझे मिलते रहते हैं। मैं उनको अपने निकट पाता हूँ। उनकी शक्ति है कि मैं उनके सपनों को साकार कर रहा हूँ। पिताश्री के सारे संस्कार, उनका रचना कर्म अध्यात्म के प्रति लगन, यह सब मैं हमारी बिटिया रानी आराध्या प्रियम में देख रहा हूँ। बहुत प्रसन्नता होती है की पिता श्री का सारा आशीर्वाद उसके पास है। उनकी प्रेरक शक्ति उसके पास है। पिता श्री के संदर्भ में लिखना यानी सूरज को दिया दिखाने जैसा है। फिलहाल इस बार इतना ही। उनका ही एक दोहा मुझे याद आ रहा है

दिशा दिगंबर नीला अंबर सभी हुए नत शीश

जीवन नौका चले निरंतर रेवा का आशीष

डॉ हर्ष कुमार तिवारी

जबलपुर मध्य प्रदेश

वो तो मेरे कृष्ण थे... - श्री राजेश पाठक प्रवीण

वो जो थे 'पूर्ण' थे। जब थे, तब भी पूर्ण थे, आज नही हैं तब भी पूर्ण हैं। 'पूर्णत्व भाव' से उन्होंने जीवन जिया। यथा नाम तथा 'जीवन शैली'। वो राजकुमार थे...। शब्दों के राजकुमार, सम्बन्ध निर्वहन के राजकुमार...। साहित्य, संस्कृति, धर्म-अध्यात्म, प्रेम, करुणा, समर्पण, त्याग, सत्यनिष्ठा, सजगता, सतर्कता, सहनशीलता के राजकुमार...।

डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' जी के सानिध्य में मैंने अपने जीवन के साहित्यिक पक्ष का 'श्री गणेश' किया और यह मैं 'पूर्णत्व भाव' से ही व्यक्त कर रहा हूँ कि मैं आज जो भी हूँ, वो वंदनीय डॉ. सुमित्र जी के व्यक्तित्व की आभा की प्रभान्विति से ही हूँ...। इसलिए मैं संस्मरण क्या लिखूँ? जब तक डॉ. सुमित्र थे, तब तक मेरी हर उपलब्धि में उनकी ही आभा थी और आज वो नहीं हैं, तब भी मैं उन्हीं के कारण साहित्यिक जीवन में शेष हूँ। मेरी तो जीवन शैली ही उनके 'सानिध्य संस्मरण' का पर्याय है। इसलिए मैं डॉ. सुमित्र जी के लिए एक पेज, दो पेज, दस या हजार पेज मेंं भी उनके सानिध्य के पूर्ण संस्मरण नहीं लिख सकता...।

मैंने उनके जीवन के 'सत्य धर्मा' स्वरूप को अपना 'पाथेय' माना। क्योंकि आदरणीय सुमित्र भैया की जीवन शैली में ही पारस प्रभा थी। व्यवहारिक और सांस्कृतिक चंदन वन की सुगंध थी। ऐसी सुगंध जिसकी अनुभूति उनके सामीप्य में आने वाले न जाने कितने-कितनों ने की। मैंने अनुभव किया कि उनमें 'बुद्ध' का 'मौन', प्रभु 'ईशु' की 'करुणा' और 'कृष्ण' की 'क्रांति' का समन्वित भाव था। मेरे लिए वो सखा भी थे तो अग्रज और पितृतुल्य भी थे...। वो मेरे सारथी थे, वो मेरे 'कृष्ण' थे। वो 'काया में कायनात' से थे। उन पर लिखने के लिए मेरे पास संस्मरण नहीं हैं...। मेरे जीवन की साँसें ही हैं... वो साँसें जो मैंने 'जी' ली हैं या वो साँसें जिन्हें 'जीना' शेष है।

भैया जी, आप क्षमा करना। मैं आप पर कुछ नहीं लिख पा रहा...। बस एक बार फिर डाँटकर कह दो कि राजेश, सारे काम करो परंतु लिखना कम मत करो...। मुझे तुम्हारी कलम चलती हुई मिलना चाहिए। और डाँटकर कह दो न कि राजेश तुम रोज फोन क्यों नहीं करते...?

भैया आपके ये अधिकार और दुलार भरे शब्द इस जीवन में कभी नहीं सुन पाऊँगा...। बहुत याद आती है आपकी...।

आपका ही अनुज

प्रवीण

सम्पादक, सनाढ्य संगम, शताब्दीपुरम जबलपुर 9827262605

सबके दिलों के राजकुमार सुमित्र जी - श्री संतोष नेमा 'संतोष'

कौन कहता है कि सुमित्र जी हमारे बीच में नहीं रहे वह सदियों तक हम सभी के दिलों में जीवंत रहेंगे उनकी सहजता, सरलता, मिलन सारिता, प्रेम सहयोगात्मक रवैया एवं साहित्य एवं पत्रकारिता के प्रति उनका अनुराग और समर्पण स्मरणीय है. उन्होंने, रूस आदि देशों में जाकर संस्कारधानी का नाम साहित्य जगत में अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर गौरवान्वित, एवं रोशन किया है सुमित्र जी के साथ आचार्य भगवत दुबे जी एवं स्वर्गीय गार्गी शंकर मिश्रा हर कार्यक्रम में साथ-साथ रहे हैं. उनकी यह त्रिमूर्ति साहित्य जगत में अपनी एक विशिष्ट उत्कृष्ट पहचान रखती है. पाथेय साहित्य अकादमी का गठन आपने किया, जिसके गठनोंपरांत सैकड़ो कृतियां पाथेय प्रकाशन से प्रकाशित हो चुकी हैं. आपसे जो भी मिला आप का होकर रह गया. हम जैसे नवोदित साहित्यकारों के लिए तो संजीवनी का काम करते थे और हमेशा समुचित मार्गदर्शन, आशीर्वाद और सानिध्य प्राप्त होता रहा है. मेरी प्रकाशित कृतियों में उनकी भूमिका एवं मार्गदर्शन मुझे प्राप्त होता रहा है.

साहित्य के गंभीर अध्येता, अद्भुत रचनात्मकता, माधुर्य व्यवहार के चलते उनके हजारों चाहने वाले हैं जिनके दिलों में राजकुमार की तरह राज करते हैं. इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनकी श्रद्धांजलि सभा में भीड़ में उपस्थित हर एक आदमी अपनी भावांजलि देने के लिए आतुर था. जब मैंने यह देखा तब उसी क्षण मेरे मन में यह विचार आया की क्यों ना एक सुमित्र संस्मरण का प्रकाशन किया जाए जिसमें उनके प्रति सभी साहित्यकारों के संस्मरण एवं भाव समाहित किए जा सकें. क्योंकि श्रद्धांजलि सभा में सभी को अपनी भाव अभिव्यक्ति का अवसर देना संभव नहीं होता है. तब हमने श्री सुमित्र जी से जुड़े सभी साहित्यकारों से अपने-अपने संस्मरण आमंत्रित किए. आज उन्हीं के आशीर्वाद से यह सुमित्र संस्मरण का प्रकाशन आपके सामने है. जब हम सुमित्र जी की बात करते हैं तो भाई हर्ष की भी बात करना बहुत जरूरी है। आज के इस दौर में उनके जैसा पुत्र बमुश्किल देखने में नजर आता है। भाई हर्ष ने अपनी मातोश्री के साथ पिताजी की स्मृतियों को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए गायत्री एवं सुमित्र सम्मान बड़े ही गौरव गरिमा के साथ स्वयं बाहर लोगों के स्वागत के लिए खड़े होकर संयोजित करना प्रणम्य एवं प्रसंसनीय है. साथ ही इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में ख्याति लब्ध हस्तियों को उनके द्वारा सम्मानित भी किया जाता है. सुमित्र जी का एक दोहा मुझे बहुत ही प्रिय लगता है -

"बांच सको तो बच लो आँखों का अखबार

प्रथम पृष्ठ से अंत तक, लिखा प्यार ही प्यार

इस एक दोहे से उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट दर्शन होता है उनके दिल में सभी के लिए प्यार था.! हमने भी उनके जन्मोत्सव पर कुछ एक दोहे लिखे थे जो...

राज करें हर दिलों में, राजकुमार सुमित्र

सबको अपने ही लगें, ऐसा मधुर चरित्र

****

यथा नाम गुण के धनी, सबके हैं वो मित्र

मिले सदा स्नेह हमें, जीवन बने पवित्र

****

मित्रों के भी मित्र हैं, राजकुमार सुमित्र

मिलते सबसे प्रेम से, उनका हृदय पवित्र

****

ज्ञान सुबुद्धि विवेक ही, होते सच्चे मित्र

संकट में जो साथ दें, होते वही सुमित्र

****

जिनकी आभा से हमें, मिलता सदा प्रकाश

लेखन में गति शीलता, उनका दे आभास

सुमित्र जी का आकस्मिक निधन समूचे साहित्य जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है. उनके प्रति हम अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि भावांजलि प्रस्तुत करते हैं. डॉ हर्ष तिवारी, डॉक्टर भावना शुक्ला। श्रीमती कामना कौस्तुभ, चाचा आनंद तिवारी एवं समूचे परिवार के प्रति उनके द्वारा प्रकाशन में दिए गए भावनात्मक सहयोग के लिए हम अत्यंत आत्मीयता के साथ आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं.

संतोष नेमा संतोष

संस्थापक मंथनश्री

संतोष कुमार नेमा "संतोष"

वरिष्ठ लेखक एवं साहित्यकार

संपर्क - आलोकनगर, जबलपुर (म. प्र.) मो 7000361983, 9300101799

व्यक्ति नहीं संस्था बन चुके थे राजकुमार तिवारी सुमित्र - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव

स्व राजकुमार तिवारी सुमित्र जी से हमारे पारिवारिक संबंध रहे हैं। मेरे पिताजी प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध अपनी किशोर वय में प्रारंभिक नौकरी के लिए मंडला से जबलपुर गए थे, तब वे जबलपुर कोतवाली के पास उसी बाड़े में रहते थे, जहां सुमित्र जी का जन्म हुआ और उन्होंने अपना पूरा जीवन वहां बिताया। पिताजी बताते हैं कि प्रारंभ में सुमित्र जी ने शिक्षक के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ किया था, किंतु अपनी रुचि के चलते उन्होंने शिक्षण की जगह पत्रकारिता को आजीविका का साधन बना लिया। पिछली सदी के अंत के पुराने दिनों में विदेश यात्रा बड़ी बात होती थी, तब इसी हिंदी काव्य और साहित्य के चलते सुमित्र जी विदेश यात्रा पर गए थे। उन्नीस सौ नब्बे के दशक में, मैं नौकरी में नया नया जबलपुर आया था, तथा वहां के साहित्यिक मंचों में काव्य पाठ हेतु जाने लगा था, मुझे स्मरण है सुमित्र जी मुझे मेरे पिताजी के साहित्यिक संदर्भ के साथ प्रमुखता से प्रस्तुत करते थे। वे नईदुनिया अखबार के साहित्य संपादक थे, मेरी कहानी, लेख और कविताएं नियमित प्रकाशित किया करते थे, आज भी वे कटिंग मेरे पास सुरक्षित हैं। उनका कहा यह वाक्य मुझे याद है है कि, इसी अखबार में छपकर संतुष्ट न हो, अब अन्यत्र पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं भेजो, इससे आगे बढ़ो। पत्रकारिता का स्वरूप उन्होंने बदलते हुए देखा पर वे जीवन पर्यंत पत्रकारिता जैसे काम में रहते हुए भी उन्होंने बेदाग सार्वजनिक जीवन जिया। वे आजीवन साहित्यिक संस्थाओं में अपना सकारात्मक योगदान सतत देते रहे। उन दिनों जबलपुर के साहित्यिक समारोह प्रायः स्व राजकुमार तिवारी सुमित्र, पिताजी प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध, स्व गार्गीशरण मिश्र, श्रीयुत भगवत दुबे, स्व कृष्ण कांत चतुर्वेदी जैसे तत्कालीन मूर्धन्य साहित्य मनीषियों के स्तंभों से दैदीप्यमान होते थे। ये विभूतियां अक्सर साथ मिलती, बैठती, जबलपुर से बाहर के साहित्य आयोजनों में जाती थी। तब मैं जबलपुर में मुख्य अभियंता था, मेरे बंगले पर भी कई बार सुमित्र जी सहित इन सबका आशीष मुझे मिला है। मुझे हार्दिक प्रसन्नता होती है कि सुमित्र जी की अगली पीढ़ी में भी वही साहित्यिक अभिरुचि बनी हुई है। सुमित्र जी के सुपुत्र श्री हर्ष तिवारी उच्च स्तर पर टीवी पत्रकारिता में साहित्यिक योगदान दे रहे हैं। मुझे याद है कि जब उन्होंने मेरा व्यंग्य "चांद पर इंस्पेक्टर मातादीन की सफलता का राज" उनके आवास पर ही रिकॉर्ड किया था, तब सुमित्र जी वहीं बैठे हुए थे, और उन्होंने मेरा व्यंग्य सुनकर मेरी प्रशंसा की थी। यह रिकार्डिंग अभी भी यू ट्यूब पर हर्ष जी के डायनामिक संवाद चैनल पर बनी हुई है। उनके समकालीन परिप्रेक्ष्य में सुमित्र जी हिंदी साहित्य जगत में सदैव याद रखे जाएंगे, वे व्यक्ति से संस्था बन चुके व्यक्तित्व रहे हैं। विनम्र श्रद्धा सुमन।

विवेक रंजन श्रीवास्तव

संपर्क - ए 233, ओल्ड मिनाल रेजीडेंसी भोपाल 462023 मोब 7000375798, ईमेल apniabhivyakti@gmail.com

पारदर्शी व्यक्तित्व मेरे पिता - डॉ. राजकुमार 'सुमित्र - डॉ. भावना शुक्ल

वरिष्ठ साहित्यकार, प्रखर पत्रकार, तेजस्वी व्यक्तित्व और यशस्वी कृतित्व के धनी मेरे पिता डॉ.राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' जैसे पारदर्शी व्यक्तित्व विरले होते हैं।

मैं बचपन से देखती आई हूँ घर का वातावरण धार्मिक, साहित्यिक सांस्कृतिक था। घर में गोष्ठियाँ होती थीं। हम शालीन श्रोता होते, सुनते-सुनते सो जाते। कुछ बड़े होने पर तैयारियों में हाथ बटाने लगे। फिर जाना कि हमारे पिता कवि लेखक पत्रकार और शिक्षक भी हैं। माँ भी शिक्षिका, लेखिका है।

पिताजी शिक्षक भी रहे, प्राइमरी से लेकर महाविद्यालय विश्वविद्यालय तक के छात्र-छात्राओं बहुत को ज्ञान दिया...। **प्रतिष्ठितों को मान** और **नवोदिता को प्रोत्साहन** एक यही उनका संकल्प रहा।

पिता के जीवन का संघर्ष उनकी माँ के देहावसान से ही शुरू हुआ और उसके बाद आयु के आठवें दशक में प्राण प्रिया पत्नी मेरी माँ डॉ. गायत्री तिवारी के वियोग से भीतर तक टूट गए थे। लेकिन हम सबकी जीवन शक्ति बनकर पिता ने हम सबको संभाला, लेकिन आज पिता के जाने के बाद हम सभी के जीवन में सूनापन और खालीपन हो गया है जिसकी भरपाई संभव नहीं है।

जिनकी ममता को नहीं, सकता कोई तोल।

पिता हमारे हैं कवच, माता है अनमोल।।

पिताजी प्रारंभ से ही पत्रकारिता, विशेष रूप से साहित्य पत्रकारिता से जुड़े रहे। पहले अंशकालिक फिर पूर्णकालिक। महाकौशल क्षेत्र के साहित्यिक एवं पत्रकारिता के स्तंभ के रूप में उन्होंने लगभग पांच दशकों तक जनमन को आकर्षित और प्रभावित किया और पत्रकारिता जगत में अपनी ख्याति अर्जित की। जबलपुर से प्रकाशित होने वाले प्रतिष्ठित समाचार पत्र **'नवीन दुनिया'** के वर्षों तक **साहित्य संपादक** रहे तथा **नारी निकुंज** के संपादन के समय में बारह-चौदह घंटे प्रेस में बिताते अंत में **संपादक** के पद से सेवानिवृत हुए. **दैनिक 'जयलोक'** के सलाहकार संपादक रहे।

मेरे पिता डॉ राजकुमार सुमित्र जी ने सन 1952-53 में अखिल भारतीय बाबू कला निकेतन के गठन द्वारा संस्थागत कार्यों का शुभारंभ किया। इसके पश्चात वह मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मिलन, गुंजन कला सदन, हिन्दी मंच भारती, मित्र संघ, जबलपुर पत्रकार संघ जैसी अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों के उत्तरदाई पदों पर कार्यरत रहे। आप जबलपुर पत्रकार संघ के महामंत्री, मित्र संघ के अध्यक्ष, हिन्दी मंच भारती के निर्देशक, अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक फोरम' विश्व मित्र भारती के संस्थापक निदेशक रहे। बाद में पापा ने पाथेय समूह {**पाथेय साहित्य कला अकादमी** की स्थापना की} जो आज भी **पाथेय संगीत** और **पाथेय प्रकाशन** अनवरत रूप से आज भी पापा जी के नाम को रोशन कर रहा है।

अत्यंत सहज सरल व्यक्तित्व के धनी मेरे पिता डॉ सुमित्र ने अपने नाम की सार्थकता के अनुभव अपने संपर्क की परिधि में आने वाले लोगों के प्रति अत्यंत सहृदय एवं संवेदनशील रहे उन्होंने निस्वार्थ भावना से सभी संस्थाओं में कार्य किया और सभी को सहयोग भी दिया। पापा का परिचय संसार अत्यंत व्यापक रहा। पापा जी के व्यक्तित्व में सेवा भावना, सहानुभूति, विनम्रता और सहज आत्मीयता की सुवास समाहित रही।

पिता के लिए मैं कहना चाहूँगी–

सदाशयी नर श्रेष्ठ वे, दिखलाते शुभ राह।

नेह उन्हें सबसे मिला, मिली सुभाषित चाह।।

सभी वरिष्ठ साहित्यकारों का स्नेहाशीष उन्हें प्राप्त था। पापा जी के साथ-साथ मुझे भी बाल्यकाल में ही मुझे महीयसी महादेवी वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा, सेठ गोविंददास, व्यौहार राजेंद्र सिंह, कालिका प्रसाद दीक्षित जानकी वल्लभ शास्त्री, विद्यावती कोकिल, सरला तिवारी, शकुंतला सिरोठिया, रत्न कुमारी देवी, हरिशंकर परसाई आदि के दर्शन और सानिध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। घर की गोष्ठियों में भी जबलपुर के वरिष्ठ साहित्यकारों का स्नेह और आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। पिताजी राज्यश्री परमानंद पटेल के प्रिय पात्र थे, उनका आशीष भी पिताजी को प्राप्त होता रहा है।

मातु-पिता से यों मिला, शुभ साहित्य प्रभाव।

पास आज दोनों नहीं, हमको खले आभाव।।

मैं अपने आप को बहुत ही भाग्यशाली मानती हूँ मुझे विरासत में साहित्यिक निधि मिली। बचपन से मैंने साहित्य की उंगली पकड़कर ही चलना सीखा है। लेकिन तब से लेकर आज तक जो कुछ भी लेखन किया है बिना पिता को सुनाएँ, दिखाएँ रचना पूर्ण नहीं होती थी।

पकड़ उंगलियाँ आपने, मुझे दिखाई राह।

साथ हमेशा हो पिता, सदा यही थी चाह।।

मुश्किल से मुश्किल क्षणों में मात-पिता ने हमको संभाला है हमारी शक्ति को कभी कम होने नहीं दिया है बल्कि शक्ति को बढ़ावा दिया है आत्मबल को मज़बूत किया है। मैं तो ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ कि मुझे हर जन्म में यही माता-पिता मिलें।

पिता धरा आकाश हैं, पिता हमारी छाँव।

मुश्किल क्षण में पिता ने, पार लगाई नाव।।

पिताजी के जाने के कुछ समय पूर्व से ही अस्वस्थता के कारण उनकी बातों से लगने लगा था कि अब जीवन नहीं बचा है. बेटा यह काम करना है, बेटा कुछ अधूरा है, कैसे पूरा करें कविता संग्रह अधूरा है, उपन्यास अधूरा है, सोच रहे हैं जल्दी से पूरा कर ले। हमने कहा पापा पहले स्वस्थ हो जाइए कुछ सब हो जाएगा। अरे नहीं अभी समय नहीं बचा है। लेकिन हिम्मत कभी नहीं हारते थे, उनका सोचना था जो भी कुछ बच्चा है उसे पूर्ण कर दूँ। कहते थे एक न एक दिन तो सभी को जाना है उससे क्या डरना।

पिताजी ने एक जगह लिखा है- ***'मृत्यु अवश्यंभावी है। किंतु, इसकी आशंका समय से पूर्व मृत्वत कर देती है। आसमान गिरेगा तो हमारे टिटहरी प्रयास से क्या होगा? बेहतर है कि हम आकाश गिरने की आशंका से उबरें और गिरती हुई छत की मरम्मत में जुड़ जाए।'***

मुझे गर्व है कि मैं साहित्यकार पिता **स्मृति शेष डॉ. सुमित्र** और **साहित्य साधिका माँ डॉ. गायत्री तिवारी** की बेटी हूँ।

मातु-पिता हमको मिलें, मिले यही उपहार।

हर जन्मों का वचन दो, मिले आपका प्यार।।

डॉ. भावना शुक्ल
संपर्क - *प्रतीक लॉरेल, J-1504, नोएडा सेक्टर - 120,   नोएडा (यू.पी)- 201307 मोब. 9278720311 ईमेल : bhavanasharma30@gmail.com*

विराट व्यक्तित्वः मेरे पापा डॉ राजकुमार सुमित्र - डॉ. कामना कौस्तुभ

विराट चेतना से संपन्न डॉ राजकुमार सुमित्र मूल्यों को जीते हैं, संत हृदय, ऋषि दृष्टि संपन्न, चिंतक, वरिष्ठ पत्रकार, कविवर जैसे संबोधनों को पिताजी के लिए हम बचपन से ही गर्वित मन से सुनते आए हैं तब इतना अर्थ नहीं पता था आज तो पिताजी के कृतित्व और व्यक्तित्व के सामने बड़ी से बड़ी उपमाएं भी छोटी लगती है।

21 जून 2015 माता-पिता की 50वीं सालगिरह (माँ की आखिरी) पर मैंने जो पत्र लिख कर दिया उसमें लिखा था कि- ईश्वर का दिया सबसे अनमोल उपहार हम बच्चों को आपका माता-पिता के रूप में मिलना है पत्र से याद आया कि अपने हर जन्मदिन पर मैं पापा से आशीर्वाद के साथ अपने लिए पत्र में एक कविता जरूर लेती थी जो वर्ष भर मुझ में उत्साह का संचार करती थी मेरे लिए पापा की लिखी यह आखिरी कविता की पक्तिंया है।

'जन्म दिवस हर एक का आता है प्रतिवर्ष

गहन उदासी हृदय में मुख पर दिखता हर्ष

किन्तु हमारी बेटियां सक्षम सबल सुजान

गंगाजल सा मानकर लेती दुख पान

बार-बार आशीष दूं तुम मेरा अभिमान

दीर्घायु यश सम्पदा दें तुमको भगवान'

वरिष्ठ पीढ़ी के मान्य साहित्यकार, सम्पादक एवं समाज सेवी डॉ. सुमित्र के. राष्ट्रधर्मी, संस्कृति कर्मी व्यक्तित्व में शिक्षक, सम्पादक और समाज सेवी का अद्‌भुत समन्वय था।

सेवाग्राम मे प्रशिक्षित श्री सुमित्र जी ने दलित पीड़ित वर्गो के संगठन, निर्देशन के साथ ही अर्थाभाव ग्रस्त साहित्यकारो तथा छात्र-छात्राओं की सहायता तत्परता से की थी।

नगर की प्राय प्रत्येक संस्था से आपका संबंध था साहित्यकार, पत्रकार, सम्मेलन हो, बाल सम्मेलन या महिला सम्मेलन अथवा दुर्गावती समारोह ये सभी आपकी कर्मठता के साक्षी है। वृक्षारोपण, पुरातत्व तथा जलाशय संघ में भी आपकी कर्मठता शामिल है।

पिताजी के साहित्यिक परिचय से तो आप सभी परिचित हैं मैं कुछ व्यक्तिगत बिंदुओं से परिचित कराना चाहती हूं। पापा की पक्तिंया है-

'मेरा नाम सुमित्र है तबियत राजकुमार, पीड़ा की जागीर है बांट रहा हूं प्यार'

'राजकुमार' यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ करते हुए पापा केवल मन से ही नहीं धन से भी राजकुमार थे रिकशे वालों को बीस की जगह पचास रूपये देना, घर में काम करने वालों को बिना मांगे आर्थिक मदद, कुछ विद्यार्थियों की फीस, हर त्यौहार पर खुले मन से सबको पैसे बांटना, और हमेशा कहते थे, सीमित आय के बाद भी पैसे का रहना मेरे पूर्वजों का, पिता और दादाजी का आशीर्वाद है साथ ही पंडित नर्मदा प्रसाद खरे जी और राम किशोर अग्रवाल मनोज जी को वे अपने पिता तुल्य मानते थे।

मां के जाने के बाद वे बिलकुल टूट गए थे पर हम बच्चों के लिए ही शायद वे दोबारा जीवन की और लौटे थे तब हम सबको भी उनका ज्यादा ध्यान रखना था तो मैं लगभग रोज ही पापा से मिलने जाती बहुत सारी बातें होती, मैं उनका एक-एक शब्द रिकॉर्ड करके रख लेती, कविताएं सुनती उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखवाना शुरू कर दी थी। हम बच्चों के लिए तो वह एक एनसाइक्लोपीडिया थे हमारे हर प्रश्न का, समस्या का, उत्तर उनके पास था तभी तो मैंने अपनी कविता में पापा के लिए लिखा था।

'मेरे लिए मेरे पिता एक पूरी दुनिया है

हर समस्या के लिए जादू की पुड़िया हैं

जीवन के उलझते प्रश्नों का समाधान है

मेरी आन बान और मेरी शान है'

अगस्त 2016 मे वे बहुत बीमार हो गए थे डॉ. शब्बीर के अस्पताल में एडमिट थे, अस्पताल में उन्होंने बहुत कुछ लिखवाया था जैसे-

'क्यों देते हो साई जी मुझको ऐसी पीर कभी पहुंचाते जामदार और कभी शब्बीर' और कहते थे मौत को मैंने बहुत करीब से देखा है। एक बार ठीक होने के बाद बहुत सारे काम करने हैं और उन्होंने किये भी

उन्हें रायपुर के पास राकां में 40 साल से बिछड़े अपने प्रिय मित्र से भी मिलना था और वह स्कूल भी देखना था जहां उन्होंने 40 साल पहले पढ़ाया था पापा को लेकर मैं बाय रोड जब वहां पहुंची तो वहां का दृश्य देखकर मेरी आँखें दंग रह गइं 40 साल बाद भी किसी व्यक्ति का ऐसा स्वागत हो सकता है? पूरा गांव सजा हुआ था उनके मित्र की दालान लोगों से अटी पड़ी थी हर कोई पापा से मिलना चाह रहा था। एक बुजुर्ग जो पापा के स्कूल के समय में चपरासी थे पापा का बहुत ध्यान रखते थे। वे अपने हाथों में पापा के लिए एक नये धोती कुर्ता छुपा कर ऐसे लाये जैसे सुदामा कृष्ण के लिए चावल लाये हो।

पापा की बुद्धि, सोच, सोच का तरीका और काम का तरीका हम सबसे तेज और त्वरित था कार्यक्रम में जाना हो तो एक दिन पहले उनके कपड़े तैयार हो जाते एक घंटे पहले चश्मा, पानी की बोतल लेकर तैयार होकर बैठ जाते, अगर हमसे कोई काम कहा और हम नहीं कर पाए तो खुद ही उठकर करने लगते, गुस्सा जितनी तेजी से आता था उतनी ही तेजी से चला भी जाता था पर हर किसी के लिए उनके मन में प्रेम था यही भाव उनकी पंक्ति में भी है।

'अवलोकन कर आप सब प्रकट करें निज भाव

मीठे बोलों का मगर होता बड़ा प्रभाव

पापा के लिए कितना लिखे जितना भी लिखे उनके लिए कम ही है। अब तो हर कठिनाई हर उलझते प्रश्नों को सुलझाने, समस्या को सुलझाने के लिए अब पिता नहीं है।

कैसे कटेगा यह जीवन आपके बिना।

डॉ. कामना कौस्तुभ

जबलपुर मो. 7974997045

कहाँ गए वे लोग - राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' - श्री प्रतुल श्रीवास्तव

स्वयं की यश-कीर्ति बढ़ाने, स्वयं को स्थापित करने, पुरस्कार-सम्मान प्राप्त करने के प्रयत्न में तो सभी लगे रहते हैं किंतु अपने मित्रों को, आने वाली पीढ़ी को निःस्वार्थ प्रोत्साहित करने, उनके कार्य में सुधार करने, उनको उचित मार्गदर्शन देने के लिए अपना समय और शक्ति खर्च करने वाले लोग बिरले ही होते हैं। वरिष्ठ शिक्षाविद्, पत्रकार, साहित्यकार डॉ.राजकुमार तिवारी "सुमित्र" ऐसे ही बिरले लोगों में से एक थे। डॉ."सुमित्र" ने श्रम और साधना से न सिर्फ स्वयं "सिद्धि" प्राप्त की वरन प्रेरणा और मार्गदर्शन देकर न जाने कितने लोगों को गद्य-पद्य लेखन में पारंगत कर प्रसिद्धि के शिखर तक पहुंचाया। मुझे याद है जब मैं कक्षा दसवीं का छात्र था तब एक कविता लिखकर उसे प्रकाशित कराने नवीन दुनिया प्रेस गया था। "सुमित्र जी" ने मेरी कविता प्रकाशित कर मुझे और और लिखने की प्रेरणा दी थी। 50 वर्ष पूर्व "सुमित्र जी" से वह मेरा पहला परिचय था। उन दिनों और उसके बाद भी सुमित्र जी के पास पहुँच कर उनका समय बर्बाद करने वाला मैं अकेला नहीं था, मुझ जैसे अनेक लोग थे, किन्तु सुमित्र जी सबसे बहुत आत्मीयता से मिलते उन्हें पर्याप्त समय देते। मुझे लगता है कि यदि सुमित्र जी स्वार्थी होते, उन्होंने नई पीढ़ी को प्रोत्साहित करने में अपने जीवन का कीमती समय खर्च न करके उसका उपयोग सिर्फ स्वयं के लिए किया होता तो शायद उन्होंने लिखने-पढ़ने का जितना काम अब तक किया है उससे कहीं दस गुना ज्यादा कर लिया होता, किन्तु वे ऐसा नहीं कर सकते थे क्योंकि वे "सुमित्र" हैं और अगर उन्होंने ऐसा किया होता तो सम्भवतः इतनी संख्या में पढ़ने-लिखने वाले लोग तैयार न होते। साहित्यकारों की नई पीढ़ी तैयार करने में जितना योगदान सुमित्र जी का है उतना उनके समकालीन साहित्यकारों में शायद ही किसी का हो।

हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि, पत्रकारिता एवं शिक्षण में पत्रोपाधि प्राप्त करके सुमित्र जी ने पी.एच डी. की उपाधि प्राप्त की। डॉ सुमित्र जी ने अपना जीवन स्कूल शिक्षक के रूप में प्रारम्भ किया फिर खालसा कॉलेज में अध्यापन किया। उन्होंने दैनिक नवीन दुनिया में संपादन कार्य कर पत्रकारिता में यश-कीर्ति प्राप्त की। वे दैनिक जयलोक के सलाहकार संपादक थे, पत्रिका "सनाढ्य संगम" के परामर्शदाता थे। उन्होंने अपने संपादन से अनेक पुस्तकों-स्मारिकाओं को स्मरणीय-संग्रहणीय बना दिया। वे शासन द्वारा अधिमान्य वरिष्ठ पत्रकार माने जाते थे। डॉ.सुमित्र ने अनेक छात्र-छात्राओं को शोध कार्य हेतु सहयोग एवं परामर्श प्रदान किया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त वि वि के अकादमिक सलाहकार एवं कोयला व खान मंत्रालय हिंदी सलाहकार समिति तथा आकाशवाणी सलाहकार समिति के पूर्व सदस्य डॉ. राजकुमार तिवारी "सुमित्र" साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था "मित्रसंघ" के संस्थापक सदस्य भी रहे हैं उनके अध्यक्षीय कार्यकाल में मित्रसंघ ने बहुत यश कमाया था। देश भर की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में डॉ.सुमित्र की सैकड़ों गद्य-पद्य रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। उनकी रचनाओं, आलेखों, रेडियो रूपकों का प्रसारण आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से जब-तब होता रहता था। डॉ. सुमित्र की संभावनाओं की फसल, यादों के नागपाश (काव्य संकलन), बढ़त जात उजियारो (बुन्देली काव्य), खूंटे से बंधी गाय-गाय से बंधी स्त्री (व्यंग्य संग्रह) सहित काव्य, कथा, चिंतन परक गद्य निबंध, रेडियो रूपक, व्यंग्य एवं उपन्यास सहित 40 से अधिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। भारत भारती, श्रेष्ठ गीतकार एवं शंकराचार्य पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित-अलंकृत डॉ.सुमित्र को श्रेष्ठ साहित्य सृजन पर साहित्य दिवाकर, साहित्य मनीषी, साहित्य श्री, साहित्य भूषण, साहित्य महोपाध्याय, पत्रकार प्रवर, विद्यासागर (डी.लिट्.), व्याख्यान विशारद, हिंदी रत्न, साहित्य प्रवीण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सुधाकर आदि सम्मान/ उपाधियां प्राप्त हो चुकी हैं। सुमित्र जी ने साहित्य समारोहों में शामिल होने न्यूयार्क (अमेरिका), इंग्लैंड, रूस आदि देशों की यात्राएं कीं थीं और सम्मानित होकर नगर का गौरव बढ़ाया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने डॉ. सुमित्र के व्यक्तित्व-कृतित्व पर आलेख प्रकाशित किये गये हैं। देश के अनेक छोटे-बड़े नगरों में उन्हें सम्मानित-अलंकृत किया गया था। वे पाथेय संस्था और पाथेय प्रकाशन के संस्थापक-निदेशक रहे हैं। उल्लेखनीय है कि पाथेय द्वारा अब तक स्थानीय एवं देश-प्रदेश के साहित्यकारों की 700 से अधिक कृतियों का प्रकाशन किया जा चुका है जो एक कीर्तिमान है। डॉ.राजकुमार तिवारी "सुमित्र" जी की धर्म पत्नी स्मृति शेष डॉ.गायत्री तिवारी समर्पित शिक्षिका और श्रेष्ठ कथाकार थीं। उनके सुपुत्र डॉ. हर्ष तिवारी अपने यू ट्यूब चैनल "डायनेमिक संवाद" के माध्यम से साहित्य, कला, संस्कृति और सेवा में रत लोगों को प्रभावशाली ढंग से समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं।

अपने सदव्यवहार, आशीष वचनों, शुभकामनाओं और सहयोग से लोगों के ह्रदय में बसने वाले डॉ. राजकुमार तिवारी "सुमित्र" जी हम सबको छोड़कर 27 फरवरी को अनंत यात्रा की तरफ चले गए। ईश्वर अपने चरणों में उनको स्थान दे। विनम्र श्रद्धांजलि....

श्री प्रतुल श्रीवास्तव

संपर्क *- 473, टीचर्स कालोनी, दीक्षितपुरा, जबलपुर - पिन - 482002 मो. 9425153629*

यादों में सुमित्र जी - श्री यशोवर्धन पाठक

आज जब मैं अपने अजातशत्रु अग्रज सुमित्र जी को शब्दों के माध्यम से अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूं तो मेरे मानस पटल पर मेरी पांच दशक की साहित्यिक यात्रा की वे सारी मधुर स्मृतियां जीवंत हो उठीं हैं जो मेरे स्मृति कोष में अमूल्य धरोहर बन गई हैं। इस सुदीर्घ यात्रा में वे हमेशा मेरा संबल बने रहे। संरक्षक, दिशा दर्शक और मार्ग दर्शक के रूप में मुझे हमेशा अपने सिर पर उनका वरदहस्त होने का अहसास होता रहा। उन्होंने मुझे न तो कभी थकने दिया और रुकने दिया, निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे। मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं नहीं है कि मैं अपनी पांच दशक की साहित्यिक यात्रा में आज जिस मुकाम पर पहुंच सका हूं, सुमित्रजी के आशीर्वाद के बिना मैं उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। मेरे स्मृति कोष की किताब के हर पृष्ठ पर सुमित्रजी के अमिट हस्ताक्षर हैं।

सुमित्रजी मेरे पूज्य पिताजी स्व. पं.भगवती प्रसाद पाठक के बहुत बड़े प्रशंसक थे। पिताजी के साथ शिक्षा, साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्रों में पिताजी के योगदान ने उन्हें बहुत प्रभावित किया था। कालांतर में स्थानीय नवीन दुनिया समाचार पत्र में साहित्य संपादक के रूप में सुमित्रजी ने मेरे अग्रज हर्षवर्धन, सर्वदमन और प्रियदर्शन जी के मार्गदर्शक सहयोगी की भूमिका का निर्वाह किया। इसी अवधि में मेरे जीवन में वह दुर्लभ क्षण आया जब मुझे उन्होंने जीवन भर के लिए अपने मोहपाश में जकड़ लिया। 1977 में अपने अनुजवत् मित्र राजेश पाठक प्रवीण के साथ मिलकर जब मैंने 'उदित लेखक संघ' संस्था की नींव रखी तो सुमित्रजी जी ही मुख्य परामर्शदाता और मार्गदर्शक थे। इस संस्था का प्रथम आयोजन स्थानीय जानकीरमण महाविद्यालय के सभागार में हुआ था जिसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में हम लोगों ने स्व हरिकृष्ण त्रिपाठी और सुमित्रजी को आमंत्रित किया था। उस अविस्मरणीय ऐतिहासिक आयोजन से ही राजेश पाठक प्रवीण ने कार्यक्रम संचालन के क्षेत्र में अपना पहला कदम रखा और आज एक कुशल संचालक के रूप में उनकी ख्याति इस महादेश की सीमाओं को भी पार कर चुकी है। राजेश पाठक का कुशल मंच संचालन आज हर साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजन की सफलता की गारंटी बन चुका है। मेरे समान ही राजेश पाठक प्रवीण भी यह मानते हैं कि आज वे जिस मुकाम पर हैं वहां तक पहुंचने में सुमित्रजी का प्रोत्साहन और मार्गदर्शन हमेशा उनका संबल बना है।

सुमित्रजी तपस्वी, मनस्वी, यशस्वी साहित्यकार थे। उन्होंने चालीस से अधिक कालजयी कृतियों का सृजन किया। उन्हें उनकी सुदीर्घ साहित्य साधना के लिए देश विदेश में अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित किया गया। संस्कारधानी के बहुसंख्य साहित्यकारों की कृतियों के लिए आशीर्वचन और भूमिकाएं लिखकर सुमित्रजी ने उन्हें गौरवान्वित किया। किसी भी पुस्तक के लिए सुमित्रजी की कलम से लिखी गई भूमिका उस पुस्तक पर सुमित्रजी की मुहर मानी जाती थी। सुमित्रजी की मुहर मतलब उस पुस्तक की सफलता की गारंटी। लगभग दो दशक पूर्व प्रकाशित मेरे प्रथम व्यंग्य संग्रह ' जांच पड़ताल ' की सफलता भी सुमित्रजी की मुहर ने पहले ही सुनिश्चित कर दी थी। सुमित्रजी लंबे समय तक हिंदी पत्रकारिता से जुड़े रहे। संस्कारधानी से प्रकाशित सांध्य दैनिक जयलोक के संपादक के रूप में सुमित्रजी ने हिंदी पत्रकारिता को नयी दिशा प्रदान की। जबलपुर जिला पत्रकार संघ में भी उन्होंने महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का हुए कुशलता पूर्वक निर्वहन किया। वास्तविक अर्थों में सुमित्रजी अपने आप में एक संपूर्ण संस्था थे जिसके अंदर संवेदनशील कवि, विद्वान लेखक, सजग पत्रकार, शिक्षाविद, प्रखर वक्ता आदि सब एक साथ समाए हुए थे।

सुमित्रजी सैकड़ों साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं के संरक्षण और मार्गदर्शक और नयी पीढ़ी के साहित्यकारों के लिए प्रेरणास्रोत थे। संस्कारधानी में कला साहित्य की अनूठी संस्था पाथेय कला अकादमी के संस्थापक थे। सुमित्रजी साहित्य जगत का वट वृक्ष थे जिसकी शाखाएं दूर दूर तक फैली हुई थीं। उनका अपना एक युग था। सुमित्रजी के देहावसान ने उस युग का अवसान कर दिया है। इसमें दो राय नहीं हो सकती कि सुमित्रजी साहित्य जगत में एक ऐसा शून्य छोड़कर गए हैं जिसे सुमित्रजी ही पुनर्जन्म लेकर भर सकते हैं।

श्री यशोवर्धन पाठक
संपर्क - 473, टीचर्स कालोनी, दीक्षितपुरा, जबलपुर - पिन - 482002 मो. 9425153629

राजकुमार सुमित्र : मित्रता का सगुण स्वरुप - श्री राजेंद्र चन्द्रकान्त राय

वह 1972 का कोई दिन था. मैं शहर से अपने घर आधारताल की तरफ लौट रहा था, कि मेरे एक पुराने मित्र मार्तण्ड व्यास मिल गए थे. वे उन दिनों कविता में हाथ आजमा रहे थे और मैंने भी कागज़ काले करने की दिशा में कदम बढ़ा रखे थे. हमारी दोस्ती का पुल यही था.

हमने बल्देवबाग तिराहे की एक दूकान पर चाय पी और वे पान खाने के लिए पान के टपरे के सामने पान लगवाने लगे. वे ज़र्दा के शौक़ीन थे, और उसे चिंतन -चूर्ण कहते थे. वे हथेली पर चूना और तम्बाकू को रगड़-रगड़ कर उन्हें एकसार कर रहे थे और इसी के साथ गप्पें लगाने का काम भी कर रहे थे.

उसी समय एक प्रौढ़ सज्जन अपने साथ दो और लोगों को लिए हुए उसी टपरे पर आ पहुंचे. उनका व्यक्तित्व और पहिरावा मुझे सम्मोहन में खींच ले गया. गौर वर्ण, प्रशस्त ललाट, काले लम्बे केश जो गर्दन के पीछे जाकर पुनः शीर्ष पर लौटने की मंसा में कुछ मुड़ चले थे. खादी का श्वेत कुरता-पाजामा, उस पर खादी की ही हल्की पीलाभ जैकेट. वाणी में खनक. साफ़ उच्चारण. गंभीर भाव. चेहरे से झरता तरल स्नेह.

मैं बात इधर कर रहा था और मन उधर को लपका जा रहा था. आँखें और कान उसी दिशा में भगदड़ सी मचाए हुए थे.

मैंने मित्र से कहा, वे कोई कवि लगते हैं... !

मित्र ने उनके केशों को लक्ष्य करके जवाब दिया - बालकवि होंगे... !

मन उनकी तरफ जा चुका था, पर तन संकोच में पड़ा रहा. उसके पाँव न बढ़े. हमने अपनी सायकलें सम्हालीं और वहाँ से निकल पड़े.

कुछ दिनों बाद 'नई दुनिया' अख़बार के दफ्तर जाना हुआ, जो उसी बल्देवबाग तिराहे पर था. मैंने उन्हें वहाँ दोबारा देखा. एक समाचार देना था, तो उन्हीं से पूछा किसे देना चाहिए. उन्होंने दीवार पर लगे लकड़ी के एक डब्बे की ओर इशारा कर कहा उधर डाल दो. समाचार को डब्बे के हवाले कर मैं फिर उनकी मेज पर गया. उसके सामने वाली बेन्च पर बैठते हुए पूछा - क्या आपसे कुछ बात कर सकता हूँ... ?

-- हाँ, ज़रूर.

मैंने पहले अपना परिचय दिया, बताया कि लिखता हूँ. उन दिनों के चर्चित कवियों और कथाकारों की रचनाओं के सम्बन्ध में उन्हें बताया. धूमिल, मुक्तिबोध, अज्ञेय, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर जैसे नामों को सुनकर उन्होंने कलम बन्द करते हुए कहा - चलो चाय पीते हैं.

हम दोनों बातें करते हुए चाय के उसी टपरे पर जा पहुंचे. अब उन्होंने बोलना शुरू किया. मिठास के साथ. खनक से भरी. आँखें भी बोलने लगीं. पलकों ने फड़कना आरम्भ कर दिया. मैं उनकी मुहब्बत में पड़ता चला गया. लगा हमारा दीर्घकाल से परिचय है. मैं उन्हें जानने के पहले से जनता हूँ. मैं उनसे मिलने के पहले मिल चुका हूँ. वे नाम से ही नहीं, ह्रदय से भी सुमित्र हैं, दिल इसकी ताईद कर चुका था. वे मित्रता का सगुण स्वरुप ही लगते थे.

एक चाय ने अकूत चाह के दरवाज़े खोल दिए. मुलाक़ातें होने लगीं. कोतवाली के बगल में चुन्नीलाल के बाड़े में भी उनसे मिलने, जाना होने लगा. बैठकें लगने लगीं. लिखा हुआ सुनना -सुनाना होने लगा.

वे राजकुमार सुमित्र थे. काया से राजकुमार और आत्मा से सुमित्र. उनके मुरीदों की संख्या अपार है. सब उम्रों के लोग उनके प्रभामंडल में हैं. उन्होंने जबलपुर में सांस्कृतिक वातावरण बनाने में अपने को खपा दिया. एक क्षितिज तैयार किया. उसमें असंख्य तारे टांकते रहे. उनकी रोशनी भी वही बने.

वे बोधि वृक्ष थे. उनके सानिध्य से मन की विचलन मुरझाने लगती थी. रचनात्मकता का आगार थे वे. नए लिखने वालों की पाठशाला थे. अपनी उपस्थिति से आयोजनों को गरिमामय बना देते थे. उनका होना आश्वस्ति थी, न होना वंचना.

वे चले गए. पर उनका जाना, चले जाना नहीं है. वे हममें कहीं शेष हैं. शेष बने रहेंगे. हम उन्हें सदा महसूस करते रहेंगे. जब कोई कठोर आघात करेगा, वे याद आएँगे. जब भी दोस्ताने की परिभाषा में खलल डाला जाएगा, तब भी वे मन में कौंध जाएंगे. जब भी निर्मल प्रेम के प्रतीक खोजे जाएंगे, तो प्रतिफल में वही मिलेंगे. उदारता के व्यंजनार्थ में वे पाए जाएंगे. आम्र -पल्ल्लवों की छाया में उन्हीं की शीतलता घुली होगी. वसन्त में शामिल रहेगा उनका दुलार और होली के रंगों में सबसे गहरा रंग भी वही होंगे.

श्री राजेन्द्र चन्द्रकांत राय

जबलपुर मध्यप्रदेश

*****

साहित्य के पारस मणि: डॉ. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' - श्री रमाकांत ताम्रकार

पारस पत्थर, शायद ही किसी ने देखा हो पर हमने पारस व्यक्तित्व श्रद्धेय डा. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' जी में देखा है। समाज का हर वर्ग उनके व्यवहार, उनकी लेखनी, उनकी सद्भावना और ज्ञान का कायल है और हमेशा रहेगा भी।

डा. राजकुमार तिवारी 'सुमित्र' जी अपने नाम के अनुसार ही राजकुमार थे वे अपना सर्वस्य नवांगुतकों एवं समाज को देते थे और अपने ज्ञान के दरिया से सबको अभीभूत कराके सबके सुमित्र बन जाते थे।

डा. तिवारी की सबसे बड़ी विशेषता उनका सहज और सरल स्वभाव था जो एक बार मिलने पर ही सबको मोह लेता था। उनके संपर्क में जो भी एक बार उन से मिल लेता तो फिर अनेक वर्षों बाद भी वे उसे नाम से बुलाते थे गजब की याददाश्त थी उनकी।

हिन्दी साहित्य उनका हमेशा ऋणी रहेगा क्योंकि उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से हिन्दी साहित्य मे अभूतपूर्व योगदान दिया है। उन्होंने हिन्दी साहित्य की नई पौध तैयार की है, जो कोई भी लेखक उनके संपर्क में आता तो वे उसे लिखने के लिए लगातार प्रेरित करते और उस लेखक की रचना को सर्वश्रेष्ठ बनाने हेतु अपना समय और सुझाव भी देते।

एक पत्रकार के रूप में उन्होंने हमेशा पीत पत्रिकारिता से परहेज किया और आदर्श पत्रकार का स्वरूप अपनाकर समाज को दिशा दी। आपने शहर में अनेक पत्रकारों की कलम को सही दिशा में चलना सिखाया है।

डा. तिवारी की सबसे बड़ी बात यह थी कि उनका पुरानी और नई पीढ़ी में अभूतपूर्व सामंजस्य की स्थापना करना। उनकी बैठक में हम लोगों को समय का पता ही नहीं चलता। अक्सर ही उनकी बैठक में साहित्य चर्चा, कवि गोष्ठी होना सहज ही हो जाता था, जिसमें वे एक गुरू, पथप्रदर्शक की भूमिका निभाते और गोष्ठियों हमें प्राप्त होने वाला चाय-नाश्ता उसका स्वाद आज भी हमारे जेहन में बसा हुआ है।

डा. तिवारी भाषाविद् थे और साहित्य संपादक के रूप में वे नवीन दुनिया में प्रकाशित होने वाले लेखकों, उनसे मिलने आने वाले साहित्यकारों को भाषा की बारीकियां समझाते और किसी पुस्तक की भूमिका लिखने के पहले उस पुस्तक की भाषागत त्रुटियों को ठीक कराते तब जाकर उस पुस्तक को श्रेष्ठ बनाकर भूमिका लिखते जिससे पढ़ने वाला भी उस पुस्तक में डूब कर पढ़ता।

उन दिनों जब हम लोगों के द्वारा कहानी मंच जबलपुर का संचालन किया जा रहा था तब एक दिन उन्होंने मुझसे कहा रमाकान्त तो मुझे कहानीकार मानता ही नहीं है इसलिए मुझे अपनी गोष्ठियों में कभी बुलाता नहीं है। तब मैंने उनसे कहा दादा आप कहानी गोष्ठियों के मात्र पात्र नहीं है उससे भी बहुत उपर कहानी लेखन के मार्ग दर्शक है। हम निकट भविष्य में एक परिसंवाद कर रहे है जिसमें आपको ही कहानी की गहराईयों को सबके सामने रखना होगा। तब उन्होंने कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति की सहजता से स्वीकृति दे दी। वर्ष 1998 में जब कहानी मंच, जबलपुर का वार्षिकोत्सव हुआ जिसमें डा. तिवारी ने कहानी पर दिये उद्बोधन से सबका मन मोह लिया। इस कार्यक्रम में एक और अभिनव प्रयोग हुआ था। वह यह कि राष्ट्ीय स्तर के कलाकार मर्मज्ञ श्री रमेश गुप्ता जी ने वर्ष भर पढ़ी गई 9 कहानियों का कहानी पोस्टर बनाकर हाल में लगाया, उसके पश्चात जब श्री रमेश गुप्ता ने कहानी पोस्टर को देखकर कहानी को हूबहू प्रस्तुत किया तब श्री रमेश गुप्ता को डा. सुमित्र जी ने अपने पास बुलाकर अपनी माला देकर उन्हें सम्मानित किया। डा. तिवारी हमेशा अपना श्रेष्ठ देने के लिए अथक श्रम करते थे जो स्तुत्य है।

एक और घटना यह है कि मैंने वर्ष 1981 के लगभग अपनी एक कहानी प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्रीराम ठाकुर दादा के माध्यम से उनके पास भेजी। मेरी वह कहानी देखकर डा. तिवारी जी ने उनसे कहा रमाकान्त को मुझसे मिलने भेजो। उनकी यह खबर पाकर मैं अभिभूत हो गया कि हिन्दी साहित्य के इतने बड़े व्यक्ति मुझे मिलने के लिए बुला रहे है। मैं उनके पास दैनिक नवीन दुनिया के कार्यालय में बड़े ही डरते डरते पहुंचा। उन्होंने देखते ही कहा आओ रमाकान्त। मैंने कहा जी दादा, पर आपने मुझे कैसे पहिचान लिया मैं तो आपसे इससे पहले कभी नहीं मिला। तब उन्होंने कहा था रमाकान्त तुम कहानी के भविष्य हो, जिससे मैं क्या कोई भी पहिचानने की भूल नही ंकर सकता। मैं उनके इस व्यवहार से अभिभूत था उनकी सहजता और मिलनसारित से अभिभूत था। वे साहित्य के एनक्लोसाईपीडिया थे उन्हें पूर्व पीढ़ी और युवा पीढ़ी के लेखन और व्यक्तित्व के बारे में पूरी जानकारी रहती थी कि कौन क्या लिख रहा है और कैसा लिख रहा है। वे हमेशा कहते थे रमाकान्त हमेशा कुछ न कुछ लिखते रहे एक दिन अपने आप सर्वश्रेष्ठ आ जायेगा।

अब इतने सहज और साहित्य की महान् विभूति की यादें ही शेष रही है उनके श्रीचरणों में विनम्र श्रद्धांजलि।

श्री रमाकांत ताम्रकार

जबलपुर मोबाइल 9926660150

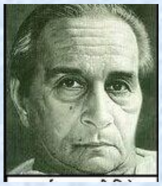

संस्मरण - पारदर्शी परसाई - स्मृतिशेष डॉ राजकुमार तिवारी सुमित्र

(इस विशेष संस्कारण में हमने स्मृतिशेष ‘सुमित्र’ जी का स्मरण किया। किन्तु, मैं स्वयं को उनके द्वारा स्व परसाई जी के विशेष संस्मरण को प्रकाशित करने से नहीं रोक सका। उनका यह संस्मरण ई-अभिव्यक्ति के “परसाई स्मृति अंक” में 22 अगस्त 2019 को प्रकाशित किया गया था।)

अगस्त 1995, अमेरिका के सेराक्यूज नगर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति, के अधिवेशन में अपना वक्तव्य देकर बैठा ही था कि जबलपुर घर से फोन संदेश मिला...परसाई जी नहीं रहे। कलेजा धक्क, मैं स्तब्ध। मैंने अपने को संभालते हुए आयोजकों को सूचित किया। ‘श्रद्धांजलि का जिम्मा संभाला’ भरे मन से कुछ कहा। अधिवेशन की समाप्ति पर विभिन्न देशों से प्रतिनिधियों ने मुझसे मिलकर संवेदना प्रकट की। देर तक परसाई चर्चा चली। मन शोकाकुल था किंतु गर्व हो रहा था अपने परसाई की लोकप्रियता पर।

दुनिया के 40 देशों तक परसाई पहुंच चुके थे। किंतु, देश प्रदेश में उनका मान था जब तक वह चलने फिरने लायक थे उन्हें मोटर स्टैंड पर भाई रूपराम की पान की दुकान से, श्याम टॉकीज के सामने रामस्वरूप के पान के ठेले के सामने बिछे तख्त पर या यूनिवर्सल बुक डिपो में आसानी से देखा मिला जा सकता था। यदा-कदा वे स्व. नर्मदा प्रसाद खरे के लोक चेतना प्रकाशन और नवीन दुनिया के चक्कर भी लगा लेते थे।

मेरे आग्रह पर वे तकलीफ के बावजूद ‘मित्र संघ’ के कार्यक्रमों में भी आते रहे। परसाई जी से मेरे पितामह स्व. पंडित दीनानाथ तिवारी के आत्मीय सम्बंध थे। मेरा परिचय कब हुआ याद नहीं। मैं उनका मित्र नहीं, स्नेह भाजन था। किंतु उनका व्यवहार सदैव मित्रवत रहा। निकट संपर्क में आया 1957-58 में, जबकि मैं साप्ताहिक परिवर्तन के संपादक स्व. दुर्गा शंकर शुक्ल का सहयोगी बना। परसाई ‘अरस्तु की चिट्ठी’ कॉलम लिखते थे और उसे समय पर लिखवाने का जिम्मा मेरा था। उन दिनों परसाई जी लक्ष्मी बाग में रहते थे। मैं एक दिन पहले ही जाता और अगले दिन का समय ले लेता। दूसरे दिन अक्सर ऐसा होता-मुझे देखते ही वे कहते, अरे तुम आ गए. बैठो चाय पियो। बस अभी हुआ जाता है। मैं समझ जाता कि कॉलम अभी लिखा नहीं गया है। ऐसा समझने का कारण था- परसाई बहुधा एक ‘स्ट्रोक’ में लिखते थे। सो, मैं चाय पी कर, आम के झाड़ के नीचे पड़ी खाट पर बैठ जाता। पूरा होता और मैं उसे लेकर चल पड़ता।

'परिवर्तन' छोड़कर मुझे छत्तीसगढ़ जाना पड़ा। एक अरसे बाद लौटा। सतना क्वाटर के सामने की सड़क पर परसाई जी मिल गए. पूछा- बहुत दिनों में दिख रहे हो, कहाँ हो?

मैंने कहा–छत्तीसगढ़ में हूँ।

बोले... क्या कर रहे हो?

मैंने संकोच से कहा–क्या बताऊँ।

उन्होंने कहा–फिर भी क्या कर रहे हो?

मैंने फिर कहा... क्या बताऊँ?

परसाई जी तत्काल बोले–समझ गया मास्टरी कर रहे हो। सोचता रहा इनकी संवेदना युक्त व्यंग दृष्टि के बारे में।

प्रेमचंद स्मृति दिवस का कार्यक्रम था। परसाई जी मुख्य अतिथि थे। प्रेमचंद जी का चित्र मंच पर रखा था, उसमें जो जूता पहने थे, पटा नजर आ रहा था। परसाई जी ने प्रेमचंद के फटे जूते से ही बात शुरू की।

कार्यक्रम के बाद मैं अपने जूते तलाशने लगा... नीचे एक जोड़ी वैसे ही फटे जूते पड़े थे जैसे प्रेमचंद जी ने पहने थे तस्वीर में। तब मैंने 'नवीन दुनिया' मैं लिखा था–प्रेमचंद के फटे जूते देखे हरिशंकर परसाई ने, पाये राजकुमार 'सुमित्र' ।

मैं परसाई जी को बड़ा भाई मानता था और 'बड़े भैया' कहता भी था। यदा-कदा उनके घर जाता चरण स्पर्श करता। वह मना करते। लेकिन जब चलने में असमर्थ हो गए तब पलंग पर पैर फैला कर तकिए से टिककर बैठते थे। तब कहते–लो तुम्हें सुभीता हो गया। अब तो मैं कुछ कर भी नहीं सकता।

बहुधा उनकी 'चिट' लेकर नए कवि लेखक मेरे पास आते। लिखा रहता–प्रिय मित्र इन पर ध्यान देना। 'इन्हें छाप देना' उन्होंने कभी नहीं लिखा। आज उन ढेर 'चिटों' को देखता हूँ, उनके हस्ताक्षर। याद करता हूँ उनका बड़कपन।

डॉ राजकुमार तिवारी 'सुमित्र'

सुमित्र जी को उनकी पुस्तक 'संभावना की फसल' के अङ्ग्रेज़ी भावानुवाद 'Yield of Potentiality' की टंकित प्रतिलिपि भेंट करते हुए। यह कदापि नहीं मालूम था कि यह उनसे अंतिम भेंट होगी। यह चित्र स्मृतिशेष जयप्रकाश पाण्डेय जी द्वारा खींचा गया था।

24 अक्तूबर 1938 - 27 फरवरी 2024

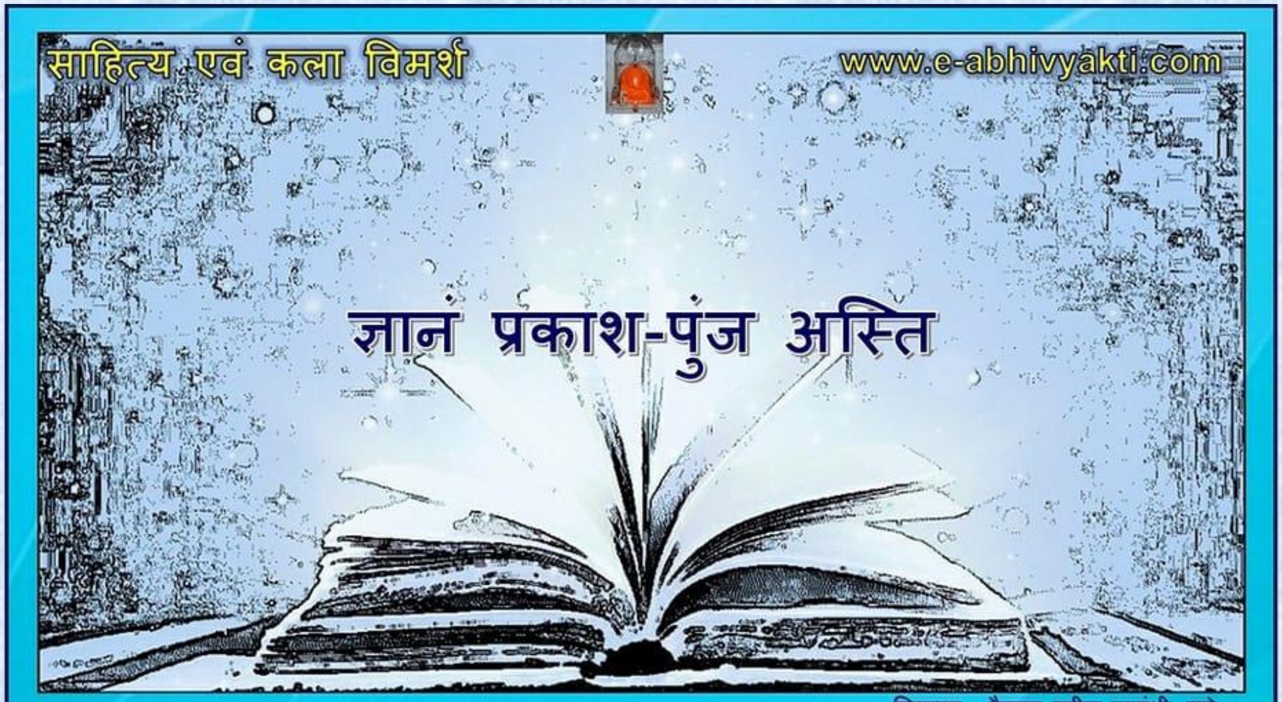

चित्रकार - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी, पुणे

सम्पादक मण्डल
हिन्दी - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव
अङ्ग्रेज़ी - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी (नौसेना मैडल), पुणे
मराठी - सौ. उज्ज्वला केळकर, श्री सुहास रघुनाथ पंडित, सौ. मंजुषा मुळे, सौ. गौरी गाडेकर
अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति - डॉ राधिका पवार बावनकर, बाम्बेर्ग (जर्मनी)

सम्पादक
श्री हेमन्त बावनकर, पुणे